देहधारण –ख्रीस्त जयंती का मर्म

देहधारणः महिमा की आशा भाग – 1

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल हों तो कृपया मेरे साथ फिलिप्पियों अध्याय 2 खोल लें। इस अध्ययन श्रृंखला में हम ख्रीस्त जयंती के महान तथ्यों का अनावरण इसी अध्याय के आधार पर करेंगे।

ख्रीस्त जयंती के रहस्य–देहधारण। यह एक गूढ़ शब्द है। मेरी यह प्रार्थना है कि हम इसे सामर्थी एवं नूतन रूप से देख पाएं।

हम सब जानते हैं ख्रीस्त जयंती एक उलझन भरा समय होता है। हम एक बालक के बारे में पढ़ते हैं जिसका जन्म गरीबी और दीनता में चरनी में हुआ फिर भी हम अपने आप को अपव्यय और पुरुस्कार वितरण में व्यस्त कर देते हैं। हम बैतलहम के सितारे के बारे में पढ़ते हैं और हर जगह जगमगाती हुई तरह–तरह की रंगीन बत्तियां लगी होती हैं। ख्रीस्त जयंती की हमारी समझ खाना पीना, घरों को सजाना आदि तक सीमित रहता है जबकि यीशु का जन्म, हम पढ़ते हैं, कि एक अव्यवस्थित स्थान में हुआ था? हम चरवाहों के बारे में गाने गाते हैं, हम स्वर्गदूतों के बारे में पढ़ते हैं।

कहीं न कहीं तो ख्रीस्त जन्म की कहानी और हमारे परिवेश में अन्तर है। मैं घिसी–पिटी बात नहीं कर रहा हूं कि हमें ख्रीस्त जयंती समारोह में मसीह को केन्द्र में रखना है। यह तो हम सुनते ही आ रहे हैं।

मैं जो कह रहा हूं वह यह है कि कलीसिया में हम जो मसीह पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, हम में भी इसके संपूर्ण अर्थ से चूक जाने की संभावना है। हम मरियम और यूसुफ और स्वर्गदूत, ज्योतिषियों, चरवाहों और कहानी के परिदृश्य पर ध्यान देते हैं फिर भी हमें ख्रीस्त जयंती के वास्तविक अर्थ से चूक जाने की संभावना है।

हमें एक प्रश्न पूछना है जो हमारी इस अध्ययन श्रृंखला का आधारभूत सत्य है। ख्रीस्त जयंती का मर्म यीशु के जन्म की परिस्थितियों में निहित नहीं परन्तु चरनी में पड़े शिशु की पहचान में है। यही ख्रीस्त जयंती का मर्म है।

यह परिस्थिति और साज–सज्जा में नहीं, परन्तु यह महान सत्य जानने में है कि परमेश्वर एक शिशु बना जो रोता–बिलखता था, बिस्तर गीला करता था जिसे भोजन की, शिक्षण की आवश्यकता थी और जो अपनी ही सृष्टि पर अपने लालन–पालन के लिए निर्भर था। वह लेटा–लेटा अन्य शिशुओं की नाईं शून्य में घूरता, हिलता–डुलता, तरह–तरह की आवाज़े निकालता था जो कोई नहीं समझ पाता। यह एक महान सत्य है कि परमेश्वर ऐसा बना। यही ख्रीस्त जयंती का मर्म है।

अतः हम इस मर्म की खोज में एक प्रश्न पूछें, "यीशु कौन है?" "चरनी में पड़ा यह बालक कौन था?"

यह एक अत्याधिक गंभीर प्रश्न है। क्योंकि पहला, यह एक ऐतिहासिक प्रश्न है। कलीसिया के इतिहास में आरंभ ही से इस बालक की पहचान पर अनेक मत रहे हैं। अपुल्लोस, एथनियस, एरियस, एस्टूरिरस आदि सब ने मसीह कौन है, इस प्रश्न पर अपना–अपना विचार प्रस्तुत किया है। क्या वह परमेश्वर है? क्या वह मनुष्य है? क्या वह मनुष्य और परमेश्वर दोनों है? क्या वह पूर्ण परमेश्वर एवं पूर्ण मानव है? क्या वह आधा परमेश्वर एवं आधा मनुष्य है? यह कैसे है?

आपके सामने ऐतिहासिक विभाजन है। यहूदी धर्म और मसीह धर्म के बीच दीवार है। यह सब मसीह की पहचान पर आधारित है। यह भेद केवल यहूदियों और मसीहियों में ही नहीं, यहोवा विटनेस, यूनिटेरियन, वरन् मुस्लमानों में भी है। मुझे भारत वर्ष में अनेक मुस्लमानों के साथ मसीह पर चर्चा स्मरण है। अतः यह एक ऐतिहासिक प्रश्न है।

दूसरा, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। मेरे विचार में यह मसीही विश्वास का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि यदि यीशु परमेश्वर है –यह शिशु परमेश्वर है तो वह नये नियम को अर्थपूर्ण बनाता है और यीशु के विषय में अन्य सब प्रश्नों का उत्तर देता है।

सोचिए! यदि यीशु परमेश्वर है तो उसका पानी पर चलना समझ में आता है। क्या आप ऐसा नहीं सोचते? उसी ने पानी बनाया था तो वह पानी पर चल सकता था। यदि यीशु परमेश्वर है तो पांच रोटियों और दो मछलियों से 5000 पुरुषों को खाना खिलाना क्या अचम्भे की बात है? उसी ने अनाज बनाया उसी ने मछली बनाई और उसी ने मनुष्य के पेट बनाए!

पुनरुत्थान भी क्या वास्तव में अचम्भे की बात है? इसके बारे में विचार करें। जब हम यह समझ लेते हैं कि यीशु परमेश्वर है तब चक्कर में डालनेवाला प्रश्न यह नहीं कि वह मृतकों में से जी उठा परन्तु यह कि वह मर गया। यह सत्य भी सब कुछ बदल देता है। यह प्रश्न सब कुछ उलट देता है।

मैं आपके साथ सी.एस. लूईस का उद्धरण बांटता हूं। वह मेरे साथ इस अध्ययन की अगुआई करेंगे। उन्होंने कहा, "मुझे मसीह के ईश्वरत्व का सिद्धान्त कोई ऐसी वस्तु नहीं प्रतीत होती जो चिपकाई गई हो और उसे उखाड़ा जा सके परन्तु वह ऐसा है जो हर समय उभरा हुआ दिखाई देता है। अतः उसे निकालने के लिए आपको पूरा जाला खोलना होगा।" यह आधारभूत बात है। अतः यह ऐतिहासिक है और महत्त्वपूर्ण भी है।

तीसरा, यह एक श्रद्धेय प्रश्न है जिसे हम कलीसिया में अनदेखा करते हैं। हम परमेश्वर के देहधारण पर अचम्भा करना कभी न त्यागें। यह ऐसा महान सत्य है जो घिसी–पिटी बात न बने और न ही उत्सव में डूब जाए। यह अत्यधिक गंभीर है। यह सोचने के लिए श्रद्धेय है। यह ऐतिहासिक है, महत्त्वपूर्ण है, श्रद्धेय है।

चौथा, यह एक व्यक्तिगत प्रश्न है। यह सत्य जिसका हम आज अध्ययन कर रहे हैं, उसकी हमारे जीवन में अनेक शाखाएं हैं। हम में से हर एक का जीवन इसी प्रश्न से युक्त रहता है–यीशु कौन है?

हम यह पूर्ण अध्ययन श्रृंखला फिलिप्पियों की पत्री अध्याय 2 पर आधारित रखेंगे। मेरे विचार में यह संपूर्ण धर्मशास्त्र में खीस्त जन्म की कहानी का सर्वोत्तम परिदृश्य है। यहां अन्तर केवल यह है कि न तो मरियम, न यूसुफ, न स्वर्गदूत यहां होंगे, न सितारा होगा और न ही ज्योतिषी होंगे। यहां इन पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाएगा। पद 5, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" अनेक जन इसे मसीही गीत कहते हैं। यह मसीह के व्यक्तित्व को गौरान्वित करता है। "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटने टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।" यह चरनी में पड़े उस शिशु के बारे में कहा गया है।

हम इससे उत्पन्न चार सत्य देखेंगे– मसीह कौन है। इस अध्ययन में हम देखेंगे कि यीशु परमेश्वर है। इस अंश के आरंभ को मैं "महिमा की आशा" कहता हूं। हम इसका अनावरण करेंगे।

पद 6 देखें, "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।" यह एक बात यीशु को इतिहास में सबसे अलग करती है। वह एक साधारण मनुष्य नहीं था। वह एक साधारण शिशु नहीं था। वह परमेश्वर का स्वरूप था। नये नियम की मूल भाषा के इन शब्दों का अभिप्राय यीशु के अस्तित्व उसके सत्व से है। वह स्वभाव और स्वरूप में था। यूनानी भाषा में कहा गया है, "स्वरूप" अर्थात ठीक वैसा ही जैसा परमेश्वर है। इसका अर्थ हुआ कि उसका सत्व परमेश्वर है– परमेश्वर का स्वभाव उसमें है।

आगे आप देखेंगे कि लिखा है, दास का स्वरूप धारण किया। यहां स्वरूप का मूल शब्द भिन्न है। यह पद स्पष्ट कहता है कि यीशु परमेश्वर ही है।

इसका अर्थ क्या है? उस मानव शिशु का परमेश्वर होना क्या अर्थ रखता है? मैं इसे समझने के लिए अन्य संदर्भ देता हूं।

मैं चाहता हूं कि आप देखें, यूहन्ना अपना सुसमाचार कैसे आरंभ करता है। मैं चाहता हूं कि आप यह भी देखें कि कुछ पद संपूर्ण यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु के बारे में जो कहा जा रहा है उसका आधार स्थापित करते हैं। यह यीशु की पहचान – उसके ईश्वरीय स्वभाव पर आधारित है। पद 1–18 फिलिप्पियों 2:6 की व्याख्या करते हैं।

फिलिप्पियों 2:1–18, "अतः यदि मसीह में कुछ शान्ति, और प्रेम से ढाढ़स, और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है, तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे। जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर

ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है। इसलिये हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ; क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो, ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का कारण हो कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ। यदि मुझे तुम्हारे विश्वास रूपी बलिदान और सेवा के साथ अपना लहू भी बहाना पड़े, तौभी मैं आनन्दित हूं और तुम सब के साथ आनन्द करता हूं। वैसे ही तुम भी आनन्दित हो और मेरे साथ आनन्द करो।"

यीशु के परमेश्वर होने का अर्थ क्या है? हमें उस बालक को देखना है और यह भी देखना है कि यूहन्ना यीशु के परमेश्वर होने के बारे में क्या कहता है। पहली बात, यह शिशु वचन है, "आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन ही परमेश्वर था।" यह क्या है? वचन क्या है? वचन कौन है? पद 14 में लिखा है कि वचन देहधारी हुआ। यह यीशु के लिए कहा गया है।

यूहन्ना यीशु को वचन क्यों कहता है? यूहन्ना क्यों उसे वचन कहता है? इस बात पर विचार करें। "आदि में..." इससे आपको कुछ याद आया? निःसन्देह यह उत्पत्ति 1:1 का स्मरण करवाता है। आदि में किसने? आदि में परमेश्वर ने। जब कुछ नहीं था तब परमेश्वर था। आदि में वचन था।

आदि में परमेश्वर था और वचन था। यहां हमारे पास वचन और परमेश्वर एक ही हैं– वचन परमेश्वर के साथ था और वचन ही परमेश्वर था। हम आरंभ में देखते हैं कि परमेश्वर ने कहा उजियाला हो जाए और परमेश्वर कहता गया और सृजन होता गया। कैसे? कहने पर! अर्थात वचन पर। उत्पत्ति अध्याय 1, 2, 3 में हम बार–बार वचन का उल्लेख पाते हैं। परमेश्वर के शब्द से ही सृजन हुआ– यह परमेश्वर का सामर्थ्य है जो वचन द्वारा सृष्टि में प्रकट हुआ। अतः परमेश्वर वचन द्वारा स्वयं को प्रकट करता है।

भजन 107:20, "वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।" पुराने नियम में बार–बार वचन परमेश्वर के सामर्थ्य प्रदर्शन का परिदृश्य है। इसका शाब्दिक अर्थ है आत्म–अभिव्यक्ति।

इस पर विचार करें। परमेश्वर का वचन उसका प्रकटीकरण है। उसकी अभिव्यक्ति है। अतः मसीह की पहचान के बारे में हम यहून्ना के आरंभ ही से देखते हैं कि वह किसकी अभिव्यक्ति है। परमेश्वर की। वह परमेश्वर की अभिव्यक्ति है। वह परमेश्वर का आविर्भाव है। वह परमेश्वर का देह में प्रकटीकरण है– एक बालक में। चरनी में उसका आविर्भाव! "वचन परमेश्वर के साथ था।" अतः स्पष्ट है कि यीशु का संबन्ध परमेश्वर से था। "वचन ही परमेश्वर था।" यीशु ही परमेश्वर था। अब आप इसे कैसे सुव्यक्त करेंगे? यही तो त्रिएकत्व का मर्म है। हम देखते हैं कि यीशु और पिता परमेश्वर सहकारी हैं तथापि संबन्ध में हैं– परमेश्वर के सत्व में।

अब आप मेरे साथ एक प्रश्न पर विचार करें। इस प्रश्न का उत्तर हमें यीशु के परमेश्वर होने को अन्तर्ग्रहण करने में सहायता करेगा। प्रश्न यह है, "क्या यीशु ने कभी कहा कि वह परमेश्वर है?" इस प्रश्न का उत्तर हमें यीशु के ईश्वरत्व की नई समझ प्रदान करेगा। क्या यीशु ने कभी कहा कि वह परमेश्वर है? यदि आप सुसमाचार में मुझे यह बता दें कि यीशु ने कहा, "मैं परमेश्वर हूं।" तो मैं आपको सौ डालर दूंगा। कोई भी प्रचारक आपको इतना पैसा नहीं देगा यदि उसे पक्का विश्वास न हो कि उसे देना नहीं होगा। सुसमाचारों में यीशु ने कहीं भी नहीं कहा कि वह परमेश्वर है।

यही बात अनेक जन–विशेष करके मुस्लमान कहते हैं कि उसने स्वयं कभी नहीं कहा कि वह परमेश्वर है। आप इस बात पर विश्वास क्यों करते हैं? वह परमेश्वर का पुत्र होने की बात तो करता है परन्तु परमेश्वर होने की बात नहीं करता है। मैं चाहता हूं कि यदि कोई पूछे तो हमें धर्मशास्त्र से संदर्भित करने को तैयार रहना चाहिए। यीशु निश्चय ही परमेश्वर होने का दावा करता है यद्यपि वह स्पष्ट शब्दों में नहीं कहता है, "मैं परमेश्वर हूं।"

देखिए यूहन्ना रचित सुसमाचार अध्याय 5, पद 16–47। यीशु के ईश्वरत्व पर यह सबसे अधिक स्पष्ट परिदृश्य है। यहां यीशु स्वयं को परमेश्वर पुत्र एवं परमेश्वर को पिता कहता है। वह वास्तव में प्रकट करता है कि वह परमेश्वर है।

यूहन्ना 5:16– सब्त के दिन यीशु ने एक पुराने रोगी को रोगमुक्ति प्रदान की। क्योंकि यीशु ने उससे कहा था, अपनी खाट उठा, और चल फिर वह अपनी खाट लेकर जा रहा था। इस बात पर यहूदी धर्मगुरु रूष्ठ हुए।

यीशु सब्त के दिन चंगाई कार्य करता था। अतः वे उसको सताने लगे। पद 16, "इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे काम सब्त के दिन करता था। इस पर यीशु ने उनसे कहा, 'मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं।' इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, क्योंकि वह... अपने आप को परमेश्वर के तुल्य भी ठहराता था।"

अतः जब यीशु परमेश्वर को पिता कहता है तो उसके कहने का अर्थ यह नहीं कि उसके पास एक पिता है जैसे आपके पास एक पिता है परन्तु यह कि पिता परमेश्वर और वह देहधारण में होकर भी बराबर हैं। अपने आपको परमेश्वर कहना! यही उसके सब्त के दिन काम करने का कारण था। यहूदी जानते थे कि परमेश्वर ने वास्तव में सब्त के दिन भी कार्य करने से पूर्ण विश्राम नहीं किया था। वह संपूर्ण सृष्टि को संभाल रहा है।

परन्तु उनके नियम कठोर थे। अतः वे विश्राम करते थे। यीशु के लिए सब्त के दिन कार्य करना वरन् उस दिन कार्य करने के सर्वाधिकार का दावा करना यही सिद्ध करता है कि वह सब्त के प्रभु, परमेश्वर के बराबर था।

इस अध्याय का अधिक गहरा अध्ययन प्रकट करेगा कि यीशु स्वयं को सब मनुष्यों का न्यायकर्ता कहता है। यहूदी विचार में सब मनुष्यों का न्यायकर्ता केवल परमेश्वर है। वह कहता है कि एक दिन सब मनुष्य उसके समक्ष खड़े होंगे। यदि आपको यीशु के युग के अगुवों को कुपित करना है तो कह दें कि उन्हें आपके समक्ष न्याय के लिए खड़ा होना पड़ेगा। वह अपने आपको परमेश्वर कह रहा था।

अब कृपया यूहन्ना अध्याय 8 खोल लें और पद 54 देखें। वे यीशु को सामरी और दुष्टात्मा ग्रस्त कहते हैं। यीशु उनसे कहता है, "यदि मैं आप अपनी महिमा करुं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं; परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। तुमने तो उसे नहीं जाना, परन्तु मैं उसे जानता हूं। यदि मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी तरह झूठा ठहरुंगा; परन्तु मैं उसे जानता और उसके वचन पर चलता हू। तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था,

और उसने देखा और आनन्द किया। यहूदियों ने उससे कहा, 'अब तक तू पचास वर्ष का नहीं; फिर भी तू ने अब्राहम को देखा है?'"

पद 58, "मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं।" हमें यहां संदर्भ समझना आवश्यक है। आज यह विचित्र बात नहीं लगती कि यीशु ने कहा, "पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ मैं हूं।" यदि मैं आपके पास आकर कहूं, "मैं हूं।" तो आप कहेंगे, "आप विचित्र बात करते हो। आप कहना क्या चाहते हैं? आपके कहने का अर्थ क्या है?"

हम जानते हैं कि पुराने नियम में परमेश्वर जब अपना नाम प्रकट करता था तब कहता था, "मैं हूं।" मूसा ने कहा, "वे मुझसे पूछेंगे कि किसने तुझे भेजा है तो मैं क्या कहूंगा?" परमेश्वर ने कहा, "उनसे कहना 'मैं हूं' ने भेजा है।" यूहन्ना रचित सुसमाचार में आदि से अन्त तक यही विषय है। यूहन्ना अध्याय 6 पद 35 में यीशु कहता है, "जीवन की रोटी मैं हूं।" अध्याय 8 पद 12, "जगत की ज्योति मैं हूं।" अध्याय 10 पद 7, "भेड़ों का द्वार मैं हूं।" और पद 11 में, "अच्छा चरवाहा मैं हूं।" अध्याय 11 पद 25, "पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं।" अध्याय 14 पद 6, "मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूं।" अध्याय 15 पद 1 और 5, "सच्ची दाखलता मैं हूं।" यूहन्ना बार–बार, जानबूझकर दिखा रहा है कि यीशु ने स्पष्ट किया कि वह "मैं हूं" है। यीशु ने कहा अब्राहम के जन्म के पूर्व से कौन है? "मैं हूं।" मैं था और मैं सदा रहूंगा। अब्राहम से पूर्व "मैं हूं।"

यह सुनिश्चित करने को कि हम विचार से भटक तो नहीं रहे, हम अगला पद देखेंगे। पद 59, "तब उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।" वे उसे पत्थरवाह क्यों करना चाहते थे? परमेश्वर की निन्दा करने का दण्ड पत्थरवाह किया जाना था। परमेश्वर से अपनी तुलना करने का अर्थ था, मृत्यु। मुझे यह अति मनभावन लगता है कि यीशु छिपकर चला गया। अतः यीशु स्वयं को परमेश्वर के तुल्य कह रहा था। यूहन्ना 10:24 में हम यहूदियों की मनोदशा देखते हैं। "यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, 'तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है तो हमसे साफ साफ कह दे।'"

यीशु ने उत्तर दिया, "मैं ने तुमसे कह दिया पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं, वे ही मेरे गवाह हैं, परन्तु तुम इसलिए विश्वास नहीं करते कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे चलती हैं; मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे चलती हैं, और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं। वे कभी नष्ट नहीं होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न

लेगा। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और पिता एक हैं।" वह स्वयं को परमेश्वर के तुल्य ठहरा रहा है।

अब देखिए पद 31 में यहूदी उसे पथराव करने को फिर से पत्थर उठाते हैं और यीशु उनसे कहता है, "मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिए तुम मुझ पर पथराव करते हो? ... इसलिए कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है।"

वे जानते थे कि यीशु स्वयं को परमेश्वर कहता है। इस कारण वे उससे रुष्ठ थे परन्तु सत्य तो यह है कि वह वचन ही नहीं कर्मों से भी स्वयं को परमेश्वर सिद्ध कर रहा था– आंधी–पानी को शांत करना, 5000 पुरुषों को भोजन से तृप्त करना, चंगाई के काम, मृतकों को पुनर्जीवित करने के काम। यूहन्ना 11 स्पष्ट दर्शाता है कि यीशु के पास परमेश्वर का सामर्थ्य एवं अधिकार थे।

यूहन्ना 20 में यीशु मृतकों में से जी उठा। यह एक अति उत्तम कार्य है जो उसे विशिष्ठता प्रदान करता है। देखिए अध्याय 20 पद 26 में वह शिष्यों के साथ है, "आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था; और द्वार बन्द थे, तब यीशु आया और उनके बीच खड़े होकर कहा, 'तुम्हें शान्ति मिले।' तब उसने थोमा से कहा, 'अपनी उंगली यहां लाकर मेरे हाथों को देख, और अपना हाथ लाकर मेरे पांजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।' यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, 'हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!'"

यह एक अवसर था। थोमा यीशु को पुकारता है, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" यदि यह सच नहीं होता तो यीशु तुरन्त कहता, "थोमा यह तू क्या कहता है? तुझे भ्रम हुआ है। मैं परमेश्वर नहीं हूं।" परन्तु उसने ऐसा नहीं कहा।

आगे पद 29 में यीशु कहता है, "तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिए विश्वास किया है? धन्य वे हैं जिन्होंने बना देखे विश्वास किया।" अतः हम यूहन्ना रचित सुसमाचार में बार–बार यही देखते हैं कि यीशु स्वयं को परमेश्वर कह रहा है यद्यपि वह स्पष्ट शब्दों में हीं कहता है, "मैं परमेश्वर हूं।" यह तो एक ही सुसमाचार का प्रकटीकरण है। अभी मत्ती, मरकुस, लूका के सुसमाचार वृत्तान्त भी हैं। मरकुस 2:1 में यीशु लकवे के रोगी को रोगमुक्ति देकर पाप क्षमा करने का अधिकार प्रकट करता है। इस संदर्भ में सी.एस. लूईस कहते हैं कि वह यीशु का सबसे बड़ा दावा था जिसके कारण वह विशिष्ठ हुआ। यह मसीह के ईश्वरत्व को देखने में

कमर तोड़ था। आप अनुचित काम करें और मैं कहूं कि तुम्हें मेरे पास आना होगा क्योंकि तुमने मुझे दुःख पहुंचाया है, तुमने मेरे विरुद्ध पाप किया है। यह अत्यधिक साहसी दावा था। यीशु बार–बार परमेश्वर होने का दावा करता है। अतः वह सुसमाचारों में परमेश्वर होने का दावा करता है।

जब हम यह देख चुके हैं कि सुसमाचारों में यीशु परमेश्वर होने का दावा कर चुका है तो अब हमारे सामने, यीशु कौन है? इस प्रश्न के चार विकल्प हैं।

पहला, यीशु एक काल्पनिक चरित्र है। जी हां, उसने परमेश्वर होने का दावा तो किया परन्तु वह एक कहानी मात्र ही है। यह एक कपोलकल्पित कथा है। हमारे पास समय नहीं है कि धर्मशास्त्र की सच्चाई, प्रमाणिकता और विश्वसनीयता देखें परन्तु मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं ऐसा कोई भी प्राचीन प्रलेख नहीं है जो इस पुस्तक के निकट हो या इसके पुरातत्व वरन् किसी भी अन्य प्रमाण के समक्ष तुल्य ठहरे। 2000 वर्षों से मनुष्य कहता आ रहा है कि यह पुस्तक विलोप हो जाएगी परन्तु ऐसा हुआ नहीं क्योंकि यह एक सच्ची पुस्तक है। यह कल्पित कथा नहीं है। अतः हमारे पास एक विकल्प यह है कि इसे कल्पना मान लें।

दूसरा विकल्प है, यदि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया तो वह झूठा था। क्या वह झूठा है? यहां हम यीशु के बारे में आज का सर्वमान्य विचार देखते हैं। थॉमस जेकरसन कहते हैं कि यीशु सबसे बड़ा और महान शिक्षक था। उसके पास मनुष्यों के लिए अधिकाधिक सुनने हेतु गंभीर विषय थे। वह परमेश्वर नहीं था। वह एक महान शिक्षक था, एक महापुरुष था।

यीशु ने अस्थिर रूप से नहीं कहा कि वह परमेश्वर है। उसकी प्रत्येक शिक्षा उसके ईश्वरत्व पर केन्द्रित थी।

अतः यदि वह अपनी शिक्षाओं के केन्द्र में अपने परमेश्वर होने को अवस्थित किए हुए था तो वह परमेश्वर है, नहीं तो वह झूठा है। यदि वह झूठा है तो हम उसे एक महान शिक्षक कभी नहीं कहेंगे। क्या आप एक झूठे मनुष्य को जो अपने संपूर्ण सेवाकाल सबको धोखा देता आ रहा है, महान शिक्षक कहेंगे? स्पष्ट है, कभी नहीं। यह एक विकल्प है। काल्पनिक चरित्र, झूठा चरित्र।

तीसरा विकल्प, क्या वह पागल है? यदि यह सत्य है जो उसने कहा तो वे कथाएं नहीं हैं। यदि वह विश्वास रखता था कि जो वह कहता है, वह सत्य है तो वह झूठ नहीं बोल रहा था। यदि वे सत्य वचन न हों तो वह पागल है। इस मनुष्य ने सोचा कि वह परमेश्वर है परन्तु वह है नहीं।

अब यदि मैं अपने आप को परमेश्वर कहने लगूं तो मेरा सेवानिवृत होना आवश्यक है और अपना उपचार करवाना चाहिए। परन्तु यदि मैं परमेश्वर होने का दावा करुं और पानी पर चलूं तथा 5000 पुरुषों को पांच रोटी और दो मछली से भोजन करवाकर तृप्त कर दूं, मृतकों को जीवन दान दूं, रोगियों को चंगा करुं तो आप निश्चय ही कहेंगे, "मैं तम्हारी बात सुन तो लूं।" यह एक विकल्प है। अतः वह या तो काल्पनिक चरित्र है या झूठा चरित्र है या वह पागल है।

हमारी संसकृति में कोई नहीं कहेगा कि यीशु पागल है जिसका मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं। यहां तक कि भ्रष्ट जनों के मन में यीशु के लिए श्रद्धा है। वे उसे न तो झूठा कहेंगे और न पागल कहेंगे।

अब यदि वह पागल नहीं, झूठा नहीं, काल्पनिक चरित्र नहीं तो एकमात्र संभावना है कि वह अपने दावे के अनुसार प्रभु परमेश्वर है।

आपने शायद सी.एस. लूईस से सुना होगा, "आप उसे मूर्ख कह सकते, उसको दुष्ट कहकर उसके मुंह पर थूंक सकते, उसे जान से मार सकते हैं या आप उसके चरणों में गिर कर उसे प्रभु और परमेश्वर कह सकते हैं।" परन्तु हम उसे एक महान शिक्षक कहकर उस पर अनुग्रह प्रदर्शन की मूर्खता न करें। उसने हमारे लिए यह नहीं रख छोड़ा है और न ही इसकी कभी इच्छा की।

हमें यीशु को इनमें से एक तो कहना ही होगा। उसे महापुरुष और महान शिक्षक कहना हमारा विकल्प नहीं है। वह या तो प्रचीनकाल की काल्पनिक कथा है, या वह झूठा चरित्र है या वह पागल है या वह सृष्टि का परमेश्वर है। उस शिशु की यही पहचान है। वह वचन है– परमेश्वर का आविर्भाव, इसका यही अर्थ है।

हमारे पास इब्रानियों अध्याय 1 पद 3 के लिए समय होता तो अच्छा था। वहां लिखा है कि वह उसकी महिमा का प्रकाश है। पद 8 में लिखा है कि वह पुत्र है। यह संपूर्ण इब्रानियां की पत्री में, और विशेष करके आरंभ के अध्याय जहां यीशु को परमेश्वर कहा गया है यह अद्भुत बात व्यक्त है। कुलुस्सियों की पत्री अध्याय 2 पद 9 में लिखा है यीशु में परमेश्वर की परिपूर्णता वास करती है। प्रकाशितवाक्य के आरंभ में

बार–बार परमेश्वर कहता है, "मैं अल्फा और ओमेगा, आदि और अन्त हूं" और पुस्तक के अन्त में यही शब्द कौन कहता है? यीशु कहता है, "मैं ही अल्फा और ओमेगा हूं।"

हम बार–बार यही देखते हैं कि वह परमेश्वर का वचन है। मैं चाहता हूं कि आप इस शिशु के बारे में तीन सत्य और देखें। दूसरा वह जीवन का सृजनहार है। कुलुस्सियों में कुछ अति उत्तम पद इसका चित्रण प्रदान करते हैं।

यूहन्ना अध्याय 1 में कहता है उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। संपूर्ण जीवन उसी में था। कुलुस्सियों अध्याय 1 इसकी व्याख्या करता है।

कुलुस्सियों 1:15–17, "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।"

क्या आप इस महान सच्चाई को समझ रहे हैं? संपूर्ण ब्रहमांड अरबों मील लम्बा–चौड़ा, ग्रह, सितारे, सूरज सब कुछ यीशु में स्थिर रहता है। हमारा संपूर्ण जीवन, जीवन की प्रतिक्रियाएं, हमारी देह, आदि सब यीशु के द्वारा स्थिर है– उस शिशु की पहचान यह है। वह जीवन का रचयिता है। आप इसे समझे? जीवन का रचयिता चरनी में पड़ा शिशु अपनी सृजित सृष्टि पर जीवन के लिए निर्भर है। आप इसे समझने का प्रयास करें तो आपके सिर में दर्द हो जाएगा। यह शिशु संपूर्ण जीवन का रचयिता है। वही सब कुछ थामे हुए है। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्य की ज्योति था। वह जीवन का रचयिता है।

तीसरा, वह जगत की ज्योति है। यूहन्ना अपने सुसमाचार वृत्तान्त में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय लिखता है कि वह तो ज्योति नहीं था परन्तु वह ज्योति की गवाही बन कर आया था कि सच्ची ज्योति जो प्रत्येक मनुष्य को जीवन दान देती है वह आनेवाली थी। यदि आप यूहन्ना रचित सुसमाचार में ज्योति का अध्ययन करें तो आप यीशु को जगत की ज्योति होने के बारे में बहुत अधिक विचार पाएंगे। अन्धकार भरे, दुःख भरे, कष्टदायक, विशाद भरे और परेशानी भरे संसार में यीशु के आते ही ज्योति चमक उठती है। अन्धकार ज्योति में डूब जाता है। ज्योति उसे पूर्णरूप से समाप्त कर देती है और तब अन्धकार पर किसी

का ध्यान नहीं जाता। एक अन्धकार भरे कक्ष में छोटी सी मोमबत्ती भी जला दी जाए तो वह ध्यान का केन्द्र बन जाती है। वह अन्धकार में जगत की ज्योति है। वह जीवन का रचयिता है और जगत की ज्योति है।

चौथा, वह महिमा की आशा है। यूहन्ना अध्याय 1 पद 14 में लिखा है, "वचन देहधारी हुआ;... और हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" यहां डेरा शब्द का अभिप्राय पुराने नियम के मिलापवाले तम्बू से है जहां परमेश्वर की महिमा अपने लोगों के मध्य वास करती थी। वहां इस्राएल दर्शन हेतु आता था। इस प्रकार जब संसार में शिशु यीशु का आगमन हुआ तो उसे यूहन्ना ने स्पष्ट किया कि वह देहधारी वचन था जो हमारे मध्य परमेश्वर की महिमा लेकर आया था। अतः अब आप इस शिशु में महिमा के दर्शन पाएंगे। हमने उसकी महिमा देखी।

परमेश्वर का एकलौता पुत्र चरनी में था। यदि आपको परमेश्वर की महिमा देखना है तो आपको मिलापवाले तम्बू में जाने की आवश्यकता नहीं है, मन्दिर जाने की आवश्यकता नहीं है। आप यीशु के पास आ जाएं। उसमें परमेश्वर की महिमा प्रकट है।

यह संपूर्ण पुराने नियम में प्रतीक्षा का विषय था। यशायाह अध्याय 46 पद 13 में परमेश्वर कहता है, "मैं सिय्योन का उद्धार करुंगा और इस्राएल को महिमा दूंगा।" वे इसकी बाट जो रहे थे। यह भविष्यद्वाणी थी और अब यह अपेक्षा की हुई परमेश्वर की महिमा, महिमा के परमेश्वर में प्रकट है– चरनी में पड़े शिशु में जिसकी उन्हें प्रतीक्षा थी। वे उसे अन्तर्ग्रहण नहीं कर पाए परन्तु संपूर्ण भविष्यद्वाणी और आशा परमेश्वर के इस आविर्भाव में समाहित थी। ये गहन सत्य है। वह परमेश्वर वचन है, वह जीवन का रचयिता है, वह जगत की ज्योति है, वह महिमा की आशा है। मैं इन तथ्यों को थियोलॉजी के क्षेत्र में ही नहीं रखना चाहता हूं। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि हम इन तथ्यों को समझें कि वे कैसे व्यावहारिक हैं।

एक नवजात बालिका अस्पताल में असाध्य रोगी है और उसे अनेक जन रक्तदान करते हैं परन्तु उस में स्वास्थ्य सुधार का लक्षण दिखाई नहीं देता है। अतः डाक्टर उसके मां–बाप को उससे मिलने देते हैं कि वे अन्तिम समय उसे अपनी बाहों में ले पाएं। अपने पहले जन्मदिन से चार दिन पूर्व वह इस संसार से कूच करती है। यहां थियोलॉजी के तथ्य काम नहीं करते हैं। वह अपने माता–पिता की बाहों में ही नहीं थी, वह जीवन के रचयिता की बाहों में थी। वह रचयिता उसकी नाईं एक शिशु बना। वह बच्ची उसी की बाहों में है। वह जीवन ज्योति की बाहों में है।

वह बच्ची अपने माता–पिता की बाहों में थी और वे मसीह में उनकी आशा की गवाही दे रहे थे। वहां विशाद नहीं था– अन्धकार नहीं था। वह कमरा ज्योतिर्मय था क्योंकि यीशु ने संसार पर और दुःख, कष्ट, रोग आदि सब पर विजय पाई है। ज्योति अन्धकार पर छाई और अन्धकार उसे ग्रहण नहीं कर पाया। अस्पताल के उस कक्ष में ज्योति थी।

वहां का सौंदर्य यह था कि वहां मसीह की आशा, महिमा की आशा का परिदृश्य था। वह बच्ची संसार के सर्वाधिक सुखी मनुष्य से भी अधिक सुखी थी क्योंकि वह उसे आमने सामने देख रही है–जीवन का रचयिता, जगत की ज्योति, महिमा की आशा को सदा सर्वदा के लिए देख रही है। यह एक श्रद्धेय समाचार है कि परमेश्वर मनुष्य बना। इस शिशु को हमें निहारना है।

इस सत्य के साथ हमें निर्णय लेना है। मैं आपको आरंभ ही में कह चुका हूं कि इस सत्य की शाखाएं हमारे मन में और जीवन में प्रवेश करेंगी। हमारे पास केवल दो विकल्प हैं। जो यूहन्ना अध्याय 1 में व्यक्त हैं।

पहला विकल्प, उसका त्याग कर दो। अध्याय 1 पद 10, "वह जगत में था और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना। वह अपने घर आया और अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।" यह एक विकल्प है कि उसका त्याग करें जो उस युग में अनेकों ने किया। आज भी अनेक यह विकल्प चुनेंगे। उसका त्याग करने का मुख्य अर्थ है कि वे कहते हैं, "मैं उसे यूहन्ना 1:10–11 के आधार पर नहीं पहचानता/पहचानती हूं और मैं उसे ग्रहण हीं करता/करती।"

मैं चाहता हूं कि आपको हमारे अध्ययन के तथ्यों से यह बोध हो कि यह मया वह है कि परमेश्वर से ऐसा कहें, "मैं तुझे परमेश्वर का वचन, जगत की ज्योति, महिमा की आशा नहीं मानता। मैं तुझे अपना जीवन का रचयिता नहीं मानता इसलिए मैं तुझे ग्रहण नहीं करता।" यह यीशु का मुंह पर परित्याग है। यह अत्यधिक घातक है।

आप यीशु से यह भी कह सकते हैं कि तू एक काल्पनिक कथा है, तू झूठा है। तू भीतर से झूठ कहता है। इसलिए मैं तुझ पर विश्वास नहीं करता तुझे ग्रहण नहीं करता हूं। तू झूठा है या तू पागल है। यही यीशु त्याग है। यह यूहन्ना 1 के अनुसार एक विकल्प है।

दूसरा विकल्प है कि उसको श्रद्धा अर्पित करें। यूहन्ना अध्याय 1 पद 12 में लिखा है, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।" दूसरा विकल्प है कि उसे श्रद्धा अर्पित करें जिसका अर्थ है हम कहें, "मैं उसमें विश्वास करता हूं और मैं उसका हूं। यह दूसरा विकल्प है।"

यही तो है कि यह सत्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इसे भूल न जाएं। यदि यीशु पूर्ण परमेश्वर नहीं है तो वह हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर नहीं ले सकता था। पिता परमेश्वर का अनन्त क्रोध और दण्ड उठाने योग्य कौन हो सकता है? भले काम करनेवाला और अच्छी शिक्षाएं देनेवाला क्या यह काम कर सकता है?

कदापि नहीं। यदि यीशु परमेश्वर नहीं है तो हमें उद्धार प्राप्त नहीं हो सकता है, न ही मसीही धर्म होगा। इसी पर सब कुछ आधारित है।

तथापि, जब हम इस सत्य में विश्वास करते हैं, जब हम इसे देखते हैं, इसे समझकर अन्तर्ग्रहण करते हैं तब इसके परिणामस्वरूप हमें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार प्राप्त होता है– उसके पुत्र, पुत्री, उसके अपने लोग! इसका एकमात्र मार्ग है यीशु में विश्वास करना– इन तथ्यों में विश्वास करना और कहना, "मैं मानता हूं कि तू ही परमेश्वर का वचन है, तू ही जगत की ज्योति है, तू मेरे जीवन का रचयिता है, तू संपूर्ण महिमा की आशा है। मैं तुझे गले लगाता हूं।"

इसी कारण यीशु की उपासना परमेश्वर की उपसना के तुल्य है। जब हम स्तुति करते हुए कहते हैं, "पवित्र, पवित्र, प्रभु की स्तुति करो, हल्लिलूयाह!" हम यीशु की उपासना करते हैं क्योंकि वही स्तुति, श्रद्धा और महिमान्वन के योग्य है। अतः ख्रीस्त जयंती का महान सत्य यही है कि बालक यीशु हमारी उपासना के योग्य है। उसका त्याग करें या उसको श्रद्धा अर्पित करें।

वे जो दुविधा में हैं उन्हें मैं वरन् हर एक को चुनौती देता हूं कि अगले कुछ क्षणों में प्रत्येक पुरुष, स्त्री, लड़का, लड़की इन दो बातों पर व्यक्तिगत निर्णय लें।

आज यदि आप उसे जानते हैं, यदि आप उसके पुत्र, पुत्री हैं, यदि आप उसमें विश्वास रखते हैं और उसके हैं तो यह उसे श्रद्धा अर्पित करने का समय है।

यदि आप यहां हैं और आप कभी ऐसी स्थिति में नहीं आए कि उसके सत्यों मे विश्वास करें और देहधारी परमेश्वर, यीशु को श्रद्धा अर्पित करें तो मैं आपको आमन्त्रित करता हूं कि आप पहली बार कहें, "हे परमेश्वर, मैं विश्वास करता हूं कि तू ने जो कहा है वह सच है। यीशु तू झूठा चरित्र है ही नहीं, न ही तू काल्पनिक चरित्र है और न ही तू पागल है। तू तो मेरे जीवन का प्रभु है और मैं तुझ ही में महिमा की आशा का विश्वास रखता हूं। यदि आपने उसमें कभी विश्वास नहीं किया है तो मैं आपको आमन्त्रित करता हूं कि आप आज ऐसा करें। यदि आप उसका त्याग करने का निर्णय लेते हैं तो जब हम उसे श्रद्धा–भक्ति अर्पित करते हैं तब आप हमें निहारें।"

प्रिय परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें इन क्षणों में, अपनी महिमा का नूतन दर्शन प्रदान कर। हे परमेश्वर, हमने तेरे वचन में जो सत्य देखें हैं वे हमारे मन में अवस्थित हो जाएं और हम तेरे पुत्र की मृत्यु पर ध्यान करें। तू देहधारण करके कैसे मर गया जिससे कि हमारे पाप क्षमा किए जाएं और हमें महिमा की आशा प्राप्त हो। यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन!